

## सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ (ढंग) (Processes Or Modes Of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन एक तटस्थ शब्द है जा समाज मे आन बाल बदलाव का विभिन्न कालों के सन्दर्भ में सूचित करता है। जब हम यह कहते हैं कि समाज मे परिवर्तन हा रहा है तो इसमें परिवर्तन की दिशा नियम, सिद्धान्त या निरन्तरता प्रकट नहीं होती। मैकाइवर एव पज, हर्बर्ट स्पेन्सर, हॉबहाउस एव सोराकिन आदि न सामाजिक परिवर्तन को विभिन्न प्रक्रियाओं एव ढंगों का उल्लेख किया है और विभिन्न समाजशास्त्रीय अवधारणाओं का जन्म दिया है। इन अवधारणाओं में प्रक्रिया (Process), आन्दोलन (Movement) वृद्धि (Growth), उद्बिकास (Evolution), विकास (Development), अवनति (Regress), प्रगति (Progress), घ्रान्ति (Revolution), अनुकूलन (Adaptation) आदि प्रमुख हैं। इनमे स कुछ का हम यहाँ उल्लेख करेंगे।

(1) प्रक्रिया (Process)— जब परिवर्तन में निरन्तरता का भाव शामिल हो तो उसे प्रक्रिया कहते हैं। मैकाइवर कहते हैं "प्रक्रिया का अर्थ वर्तमान शक्तियों की क्रियाशीलता द्वारा एक निश्चित रूप में निरन्तर परिवर्तन स है।" उदाहरण के रूप में, हम समाजाजन एव विघटन की प्रक्रिया का उल्लेख कर सकते हैं। प्रक्रिया उत्थान और पतन, प्रवृद्ध और पराक्ष किसी भी ओर तथा किसी प्रकार को हा सकती है। इस प्रकार प्रक्रिया मे परिवर्तन का एक निश्चित क्रम होता है जिसके द्वारा एक अवस्था दूसरी में विलीन हो जाती है। उदाहरणार्थ, जब हम यह कहते हैं कि भारत मे सयुक्त परिवार विघटन की प्रक्रिया में है तो हमारा तात्पर्य यह है कि सयुक्त परिवार एकाकी परिवार को दिशा मे निरन्तर परिवर्तित हो रहे हैं और सयुक्तता की अवस्था एकाकी अवस्था में विलीन हा रही है।

(2) उद्बिकास (Evolution)— सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया या ढंग उद्बिकास है। उद्बिकास क रूप में सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करने वालों मे हर्बर्ट स्पेन्सर प्रमुख हैं जिन्होंने उद्बिकास की अवधारणा डार्विन से ग्रहण की थी। डार्विन ने जीवों का उद्बिकास सिद्धान्त 1859 मे अपनी कृति *The Origin of Species* में प्रस्तुत किया था। आपने कहा था कि जीवों का विकास सरलता स जटिलता की ओर, समानता से असमानता की ओर निरन्तर एव सुनिश्चित स्तरों में हुआ है। डार्विन क इस सिद्धान्त को स्पेन्सर ने समाज पर लागू किया और कहा है कि समाज का उद्बिकास भी जीवों को तरह ही हुआ है। स्पेन्सर ने सामाजिक उद्बिकास के चार स्तरों— जगली अवस्था, पशुचारण अवस्था, कृषि अवस्था एव औद्योगिक अवस्था का उल्लेख किया। जब परिवर्तन एक निश्चित दिशा मे निरन्तर हो तथा रचना व गुणों में भी परिवर्तन हो तो उसे हम उद्बिकास कहते हैं। इस हम एक सूत्र द्वारा प्रकट कर सकते हैं—

गुणात्मक परिवर्तन + रचना में परिवर्तन + निरन्तरता + दिशा = उद्बिकास।

उद्बिकास में किसी वस्तु के अतिरिक्त गुणों में परिवर्तन होता है। यहाँ उद्बिकास एव वृद्धि (Growth) में अन्तर करना आवश्यक है। जब किसी वस्तु में परिमाणात्मक (Quantitative) परिवर्तन होता है तो उसे हम वृद्धि कहते हैं। इस प्रकार वृद्धि मे भी परिवर्तन की दिशा स्पष्ट होती है। वृद्धि आकार में होने वाले परिवर्तन को सूचित करती है।

(3) प्रगति (Progress)—अच्छाई की ओर होने वाला परिवर्तन को प्रगति कहा जाता है। कई विद्वानों ने उद्दिष्टास एव प्रगति में कोई भी बदलाव नहीं किया है जबकि इन दोनों में पर्याप्त अन्तर है। इस परिवर्तन को हमारी इच्छाओं एवं लक्ष्यों के अनुसृत होने प्रगति के नाम से जाना जाते हैं। प्रगति का सम्बन्ध सामाजिक मूल्यों और आदर्शों से है जहाँ समाज जिन लक्ष्यों का आदर्श एव वांछित मानता है, उन्हीं दिशा में होने वाला परिवर्तन प्रगति के अन्तर्गत आता है। इस प्रकार प्रगति एक मूल्य-आधारित शब्द (Value-laden term) है। प्रगति का सम्बन्ध नैतिकता से भी है। समाज जिन कानूनों और उद्देश्यों का नैतिक या अन्तर्गत मानता है उस ओर परिवर्तन प्रगति कहलाता है। प्रगति की मात्र सम्भाव्य है। नैतिक प्रवृत्तियों समाज का प्रगति भिन्न-भिन्न समाजों को दृष्टि से अलग-अलग है। अतः एक समाज में जिस प्रगति कहते हैं वह सकता है दूसरे समाज में यहाँ अप्रगति मानी जाये। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता के अन्तर्गत वृद्धि को प्रगति माना गया जबकि भारत में अप्रगति।

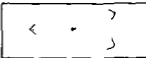
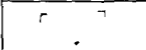
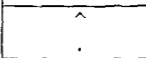

(4) अनुकूलन (Adaptation)—परिवर्तन की प्रक्रिया अनुकूलन है। अनुकूलन में एक व्यक्ति दूसरे में समायाजन करने का प्रयत्न करता है। अनुकूलन किन्तु सीमा तक होता है। इस बात का प्रकट करने के लिए कुछ शब्दों जैसे आभयाजन (Adjustment), समायाजन (Accommodation), सात्त्विकरण (Assimilation) तथा एकीकरण (Integration) आदि का प्रयोग किया गया है। अनुकूलन की प्रक्रिया या बातों की ओर संकेत करती है— (1) व्यक्ति अपने को परिस्थिति के अनुसार ढाल ले, (2) धर्मावरण या परिस्थितियों का अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सरोधित कर ले। इस प्रकार अनुकूलन भी एक प्रकार का परिवर्तन है जो सभी समाजों में पाया जाता है।

(5) विकास (Development)—यह किन्ती वस्तु की शक्ति में धीरे-धीरे होने वाला परिवर्तन का सूचक है। उदाहरण के लिए मानव का विकास जब बालक से युवा अवस्था में जाता है तो उसमें निश्चित जैविक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं। जब कोई समाज परावृत्त अवस्था से औद्योगिक अवस्था में परिवर्तित होता है तो उसे हम सामाजिक विकास कहेंगे। विकास के लिए कई बार जान-बूझकर निश्चित दिशा की ओर परिवर्तन लाये जाते हैं। उदाहरण के लिए, गाँवों के विकास के लिए सामुदायिक विकास तथा समन्वित ग्रामीण विकास योजनाएँ इसी प्रकार के प्रयत्न हैं। हॉजहाउस ने अपनी पुस्तक 'Social Development' में विकास के चार मापदण्डों का उल्लेख किया है। वे हैं— मात्रा में वृद्धि (Increase in Scale), कार्यक्षमता (Efficiency), आपसी सहयोग (Mutuality) तथा स्वतन्त्रता (Freedom)। ये विकास को एक ऐसी प्रक्रिया मानते हैं जिससे सभी समाज गुजरते हैं।

(6) क्रान्ति (Revolution)—क्रान्ति परिवर्तन की तीव्रता एवं आकस्मिकता का प्रकट करती है। इसमें परिवर्तन का क्रम टूट जाता है और यथायक परिवर्तन प्रकट होते हैं। हॉपर ने अपनी पुस्तक 'Revolutionary Process' में लिखा है, "सामाजिक क्रान्ति वह तीव्र परिवर्तन है जिसमें व्यक्ति को एक दूसरे से सम्बन्धित रखने वाली राजनीतिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती है और सरकार अस्थायी रूप से एक कार्यशील सत्ता के रूप में नहीं रह पाती। इस दशा में समाज की मौलिक एकता भंग हो जाती है एवं सामाजिक व नैतिक मूल्य समाप्त होने लगते हैं। इसमें

सामाजिक संरचना का स्थायी रखन वालों औपचारिक मान्यताएँ अस्थायी रूप में नष्ट हो जाती हैं। यदि क्रान्ति में अधिक तीव्रता आती है तो सभी प्रमुख संस्थाएँ काफी परिवर्तित हो जाती हैं। इस प्रकार राज्य, धर्म परिवार व शिक्षा अपने मूल रूप में काफी बदल जाते हैं।

जब किसी समाज में असन्तुष्ट शोषण, तनाव, अत्याचार आदि में वृद्धि होती है तो क्रान्ति जन्म लेती है। फ्रान्स रूस चीन, क्यूबा आदि देशों में होन वाली क्रान्ति इसी बात की द्योतक है। सामाजिक क्रान्ति दो प्रकार से हो सकती है— हिंसात्मक एवं अहिंसात्मक तरीके से। संज्ञा व शक्ति के माध्यम से होन वाला परिवर्तन जिसमें खून बहाया जाता है हिंसात्मक क्रान्ति कहलाती है। ऐसी क्रान्ति रूस और चीन में हुई थी। भाग्य में शान्तिपूर्ण तरीके से किये जाने वाले परिवर्तन अथवा श्रैष्ठ्यात्मक क्रान्ति अहिंसात्मक क्रान्ति के उदाहरण हैं। कुछ विद्वान क्रान्ति को विघटन की श्रेणी में रखते हैं जबकि कुछ इस परिवर्तन को सकारक माध्यम समझते हैं।

	उद्विकास-किसी भाँदिया में होन वाला क्रमबद्ध परिवर्तन
	प्रगति- समाज स्वाकृत मूल्यों की ओर परिवर्तन
	विकास- सदैव ऊपर का ओर होन वाला परिवर्तन
	क्रान्ति- अचानक होन वाला परिवर्तन जिसमें कोई क्रम न हो

सामाजिक उद्बिकाम प्रगति विकास और क्रान्ति का हम उपर्युक्त चित्र द्वारा व्यक्त कर सकते हैं।

भारत में सामाजिक परिवर्तन की जा प्रक्रियाएँ चल रही हैं, उनमें संस्कृतीकरण, परिचयीकरण, नगराकरण, औद्योगीकरण, लौकिकीकरण एवं आधुनिकीकरण प्रमुख हैं। हम यहाँ कुछ प्रक्रियाओं पर आगे क अध्याय में विस्तार से चर्चा करेंगे।